नदी की आत्मकथा

वन्दना कनौजिया पुत्रीश्री हरीदास,
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की ।

मैं नदी हूँ लोग मुझे कई नामों से बुलाते हैं । मेरे पिता हिमालय, पर्वतों के राजा हैं मेरे पिता ने मेरा अत्यन्त लाड-प्यार से पालन-पोषण किया है । एक दिन मेरे पिता ने मुझसे कहा कि "कन्या पराया धन होती है, उसे एक न एक दिन अपने पिता का घर छोड़कर जाना ही पड़ता है। तुम्हारा जन्म यहाँ रहने के लिए नहीं हुआ है तुम्हें अपने शीतल जल से लाखों-करोड़ों लोगों की प्यास बुझानी है लोगों का उपकार करना है, अपने कर्तव्य पथ पर चलते हुये तुम्हें कभी रूकना नहीं है और अंततः सागर में मिल जाना है ।

पिता के इन शब्दों ने मुझे भावुक बना दिया पिता की गोद छोड़कर जाना है, इसकी कल्पना मात्र से ही मेरा हृदय विह्वल हो गया, लेकिन तभी अपने कर्तव्य का ध्यान आया और मैने पिता की मानकर घर से निकलने और संसार की सेवा करने का निश्चय कर लिया। पिता की गोद छोड़कर मैं धीमी गति से निकल पड़ी उस समय मैं बहुत घबराई हुई थी। मन में यही सोच रही थी कि मार्ग में कौन-कौन सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा लेकिन जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती गई मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया", मेरा जल पाकर किसान धन्य हो गये। मेरे जल का उपयोग कर लोगों ने बिजली का निर्माण किया मैं विघ्न बाधाओं से घबराती नहीं हूँ। यदि मेरे मार्ग में कोई अवरोध आ जाता है तो उसे भी अपने साथ बहा ले जाती हूँ । मैं अपने तेज बहाव से पत्थर के भी टुकड़े-टुकड़े कर देती हूँ लेकिन मुझे अफसोस है जिन मनुष्यों का मैंने उपकार किया वही आज मुझमें कूड़ा करकट फेंक देते हैं, मुझमें गन्दे नाले मिला देते हैं वह जरा भी नहीं सोचते कि मेरा जल कितना अशुद्ध हो जाएगा । मेरी सुन्दरता, स्वच्छता, निर्मलता नष्ट हो जाएगी । ऐसा करके मनुष्य स्वयं अपना नुकसान कर रहा है । एक समय ऐसा आयेगा जब उसे पीने के लिए पानी भी नसीब नहीं हो पायेगा।

मैं मनुष्य जाति को चेतावनी दे रही हूँ कि यदि वह मुझे इसी प्रकार प्रदूषित करता रहा तो मेरी भी सहन-शक्ति एक न एक दिन समाप्त हो जाएगी और यदि मुझे क्रोध आ गया तो मैं दण्ड देने से भी पीछे नहीं हटूंगी। मनुष्य ने बाढ़ के रूप में तो मेरा क्रोध देखा है अतः मनुष्य जाति यह संकल्प ले कि वह मुझे प्रदूषित होने से बचाएगी इसी में सारे संसार का कल्याण है ।